दाम्पत्य जीवन का मंगल सूत्र : ताल से ताल मिला

-प्रो. वीरसागर जैन

संस्कृत-महाकवि आचार्य वादीभसिंहसूरि द्वारा रचित 'क्षत्रचूडामणि' में एक पंक्ति आती है- **'संसारोऽपि हि सारः स्यात् दम्पत्योरेककंठयोः'** - अर्थात् वैसे तो संसार असार ही है, परन्तु यदि पति-पत्नी एककंठ हैं तो उस असार संसार को भी कथंचित् सार कहा जा सकता है |

आचार्य वादीभसिंहसूरि के उक्त कथन पर यदि हम गंभीरतापूर्वक चिंतन करें तो प्रतीत होता है कि यह कोई साधारण उक्ति नहीं है अपितु दाम्पत्य जीवन का एक ऐसा महान मंगल मंत्र/सूत्र है जिसमें एक ही पंक्ति में सुखद दाम्पत्य जीवन का सारा रहस्य समाहित कर दिया गया है |

सामान्य प्राणी एकाकी नहीं जी पाता, उसे किसी उपयुक्त जीवन-साथी की आवश्यकता होती है, बिना साथी के उसे सुख-शान्ति नहीं मिलती- 'अमित्रस्य कुतो सुखम्' | ऐसी स्थिति में समान रुचि के दो प्राणी अत्यंत प्रेमपूर्वक मिलकर रहना प्रारम्भ करते हैं- इसी का नाम विवाह है | यह विवाह आजीवन सुख-समृद्धि का हेतु बना रहे- इसके लिए आचार्यदेव ने उपर्युक्त पंक्ति में एक ही अचूक उपाय बताया है कि पति-पत्नी को सदा एककंठ (एकमत) रहना चाहिए, एक-दूसरे के साथ स्वर में स्वर मिलाना चाहिए, एक-दूसरे का कहना मानना चाहिए | सफल वैवाहिक जीवन के लिए पति-पत्नी का एककंठ रहना सबसे आवश्यक है, क्योंकि यदि बात-बात में मतभेद रहा, दोनों अलग-अलग स्वर अलापते रहे तो घर में सुख-समृद्धि कदापि नहीं हो सकती, अपितु कलह, कष्ट और पतन ही रहेंगे, घर नरक बन जाएगा | किसी अन्य कवि ने भी कहा है कि यदि पति-पत्नी एकमत रहें तो घर स्वर्ग बन जाता है, वहाँ सुख-समृद्धि-लक्ष्मी निवास करती है और यदि एकमत न रहें, विवाद करते रहें तो वहाँ अनेक विपत्तियाँ आती हैं-

"सुमिल तहाँ पर संपत्ति नाना, कुमिल तहाँ पर विपति निदाना |"

प्रश्न है कि दो व्यक्ति दो ही रहेंगे, वे सदा एकमत कैसे हो सकते हैं?

समाधान – प्रथम तो विवाह उन्हीं का होता है जो समान रुचि के होते हैं, अतः उनका एकमत होना कठिन नहीं है | परन्तु अलग-अलग वातावरण में बचपन बिताने के कारण उनमें कुछ भिन्नताएँ होना भी स्वाभाविक है | परन्तु इतनी समझदारी तो उनमें होनी ही चाहिए कि वे उन्हें समन्वय और सहिष्णुता के साथ सुलझा लें, जीवन की ताल न बिगड़ने दें, ताल से ताल मिली ही रहे- यही शिक्षा का सुफल है | तर्क, युक्ति, प्रमाणादि पूर्वक हुए संवाद से मतभेदों को मिटाना बहुत आसान होता है, और इस प्रकार दोनों एककंठ रहकर अपना वैवाहिक जीवन सुखी बना सकते हैं | तथा इसके बाद भी यदि कोई छोटा-मोटा मतभेद न मिट पाए तो इतना तो होना ही चाहिए कि वह हमारे मन-मुटाव(विवाद) का कारण न बने | जहाँ मतभेद होते हुए भी मनभेद न रहें, वही सफलतम वैवाहिक जीवन है |

लोक में भी कहते हैं –'रहन-सहन'| इसका अभिप्राय है कि इस दुनिया में वही रह सकता है जो सह सकता है; जो सह नहीं सकता, वह रह भी नहीं सकता | यह जीवन ऐसा ही है | इसमें कोई भी हो, कितना भी बड़ा हो, उसे कुछ-न-कुछ सहना ही पड़ता है | सभी इच्छाएँ कभी किसी की पूरी नहीं हुईं और हो भी नहीं सकतीं, संभव ही नहीं है | अतः पति-पत्नी दोनों को पारस्परिक प्रेम और विश्वास की कीमत समझनी चाहिए | उसके आगे संसार

की किसी भी वस्तु की कीमत नहीं होती है | यदि प्रेम खोकर कुछ पा भी लिया तो वह व्यर्थ है, सुखद नहीं हो सकता |

यदि पति-पत्नी में प्रेम और विश्वास है तो बड़ी से बड़ी समस्या को सरलता से सुलझाया जा सकता है और यदि वह चला गया तो फिर समझो कठिनाइयाँ ही कठिनाइयाँ हैं, बात- बात पर कलह ही कलह है | प्रेम के हाथों की सूखी रोटी भी मीठी लगती है और प्रेम गया तो हलवा-पूरी भी फीके लगते हैं | अतः प्रेम का महत्त्व समझकर पति-पत्नी दोनों को एकमत बने रहना चाहिए | कदाचित् कुछ मतभेद हो तो भी उसे बड़ा नहीं होने देना चाहिए | यदि एक बार जोर से मतभेद उजागर होकर घर में कलह कर गये तो समझ लो बड़ी समस्या खडी हो गई, क्योंकि-

'रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय | टूटे से फिर न मिले, मिले गाँठ पड़ जाय ||'

'बिगड़ी बात बने नहीं, लाख करो किन कोय| रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय||'

वैसे भी आजकल तो वर और वधू दोनों ही उच्च शिक्षा प्राप्त होते हैं, वे कोई बच्चे नहीं होते, अत: उन्हें बड़ी सावधानी से काम लेकर प्रेम का महत्त्व समझते हुए बड़े प्रेम के साथ रहना चाहिए तथा एक-दूसरे के स्वर में स्वर मिलाना चाहिए, किसी को भी एक-दूसरे की बात काटनी नहीं चाहिए | जैसी भी स्थिति है, उसी में त्याग, सहिष्णुता, क्षमा, मौन ('मौनं सर्वार्थसाधकं') आदि सद्गुणों का सहारा लेकर अपना गृहस्थ जीवन स्वस्थ, समृद्ध और सुखमय बनाना चाहिए- यही सबसे ऊँची शिक्षा है-

'पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय | ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय|'

पति-पत्नी दोनों को प्रेम की कीमत समझनी चाहिए, जो संसार की सबसे मूल्यवान वस्तु है | चाहे सब कुछ चला जाए, पर प्रेम को कदापि कथमपि नहीं खोना चाहिए | यदि कदाचित् कुछ अनबन से उसमें विघ्न आये तो भी उसे पुनः शीघ्र जोड़ लेना चाहिए और ऐसा, जरूरत पड़े तो, सैकड़ों बार भी किया जा सकता है, पर प्रेम तो बरकरार रहना ही चाहिए-

'रूठे सुजन मनाइए, जो रूठे सौ बार | रहिमन फिर फिर पोइए, टूटे मुक्ताहार ||'

यदि पति-पत्नी में प्रेम नहीं, कलह है, तो तीन लोक का राज्य भी सुख नहीं दे सकता- यह बात सभी पति-पत्नियों को गाँठ बांधकर अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए |

विवाह के समय पति-पत्नी के बीच प्रेम का अंकुर उत्पन्न होता है | परिजन-पुरजन उसे आशीर्वाद और शुभकामनाओं का खाद-पानी देकर चले जाते हैं | आगे यदि पति-पत्नी में सहमति चलती रही तो वह प्रेमांकुर दिन-प्रतिदिन फलता-फूलता हुआ एक सुखदायक वृक्ष बन जाता है और यदि विमति बढती रही तो शीघ्र ही सूखकर ठूंठ के समान बोझा बन जाता है | पहली स्थिति पति-पत्नी को 'चतुर्भुज' बनाती है, दूसरी 'चौपाया'|

- एक गरम तो दूजा नरम, यही गृहस्थ का परम धरम |
- जीवन चलता श्वास से, गृहस्थी चले विश्वास से |
- अहंकार ममकार नहीं, णमोकार संस्कार सही |
- कोई किसी की बात न काटो, सुख दुःख दोनों मिलकर बाँटो |
